गुरु नानक कॉलेज, धनबाद
अभिभावक-शिक्षक बैठक
17 अक्टूबर 2024

गुरु नानक कॉलेज, धनबाद के अंग्रेज़ी विभाग ने 17 अक्टूबर 2024 को भुदा परिसर स्थित रूसा सेमिनार हॉल में अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक की शुरुआत डॉ. वर्षा सिंह ने की, जिन्होंने विभाग और इसके संकाय सदस्यों का परिचय कराया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. संजय प्रसाद ने सभा को संबोधित किया और कॉलेज द्वारा छात्रों को प्रदान की जा रही सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने अभिभावकों से बातचीत करने का अनुरोध किया और उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे अपने विचार साझा करें। अंग्रेज़ी विभाग के अध्यक्ष, प्रो. अमरजीत सिंह ने सभा को संबोधित किया और कॉलेज में उपलब्ध पुस्तकालय और अन्य आवश्यक सुविधाओं पर चर्चा की। उन्होंने छात्रों की उपस्थिति को लेकर विभाग की चिंताओं को साझा किया। प्रो. दीपक कुमार ने भी उपस्थिति के महत्व पर जोर देते हुए महाविद्यालय के क्रियाकलापों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बैठक के दौरान अभिभावकों ने भी अपने सुझाव दिए, जिन्हें प्राचार्य ने ध्यानपूर्वक सुना और उन पर कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर सक्रिय रूप से उपस्थित संकाय सदस्यों में सुश्री घनिष्ठा वर्मा, सुश्री सुरभी कश्यप और सुश्री राशी पोद्दार शामिल थीं।

बैठक के दौरान प्रस्तुत मुद्दे -

छात्रों से अपेक्षाएँ:

छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने अध्ययन की जिम्मेदारी लें, जिसमें समय प्रबंधन, नियमित कक्षाओं में उपस्थिति, समय पर कार्य पूर्ण करना और असाइनमेंट्स को बिना निरंतर अनुस्मारक के पूरा करना शामिल है। शिक्षकों को उन छात्रों से प्रसन्नता होती है जो कक्षा की चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, प्रश्न पूछते हैं और समूह परियोजनाओं में सहयोग करते हैं। छात्रों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे कक्षा में पहले से दिए गए अध्ययन सामग्री को पढ़कर और आवश्यक कार्यों को पूरा करके आएँ, ताकि वे सार्थक योगदान दे सकें। नकल, धोखाधड़ी, और अनैतिकता को गंभीर अपराध माना जाता है। शिक्षकों को उम्मीद होती है कि छात्र अपने कार्यों में नैतिक मानकों का पालन करें और स्रोतों का सही तरीके से उल्लेख करें। छात्रों से केवल रटने से आगे बढ़ने की अपेक्षा की जाती है। शिक्षकों को वे छात्र पसंद हैं जो जानकारी का विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन करते हैं तथा जो उन्होंने सीखा है उसे वास्तविक दुनिया की समस्याओं पर लागू कर सकते हैं। शिक्षकों से संवाद करते समय छात्रों को प्रभावी संचार की अपेक्षा होती है, चाहे वह शंका स्पष्ट करने के लिए हो, मदद माँगने के लिए या किसी चिंता पर चर्चा करने के लिए। इसमें सही ईमेल शिष्टाचार और कार्यालय समय का पालन करना शामिल है। छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे समूह में अच्छे से काम करें और सहपाठियों, शिक्षकों, और भिन्न दृष्टिकोणों के प्रति सम्मान दिखाएँ।

अभिभावकों से अपेक्षाएँ:

शिक्षकों को यह अच्छा लगता है जब अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षा के प्रति स्वतंत्रता देते हैं। वे आम तौर पर चाहते हैं कि अभिभावक सीधे शैक्षणिक मामलों में हस्तक्षेप न करें, जैसे कि अंकों या असाइनमेंट्स को लेकर बातचीत। शिक्षकों को उम्मीद होती है कि अभिभावक उनके शैक्षणिक निर्णयों और पढ़ाने की विधियों पर भरोसा करें। जब तक कोई गंभीर चिंता न हो, वे नियमित संवाद की अपेक्षा नहीं करते। शिक्षकों को यह अपेक्षा होती है कि अभिभावक अपने बच्चों को स्वयं अपने शैक्षणिक दायित्वों को संभालने के लिए प्रेरित करें, जिसमें सीधे शिक्षकों से संवाद करना और अपने समय तथा पाठ्यक्रम का प्रबंधन शामिल है।

नियमित उपस्थिति का महत्व:

नियमित उपस्थिति से छात्रों को कोर्स सामग्री की संरचित व्याख्या मिलती है, जो अक्सर पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध नहीं होती। कक्षाओं में उपस्थिति से छात्रों को चर्चाओं में भाग लेने, प्रश्न पूछने और शिक्षकों से त्वरित प्रतिक्रिया प्राप्त करने का अवसर मिलता है। शिक्षकों द्वारा दी गई व्याख्यानों में अक्सर वास्तविक जीवन के उदाहरण या अतिरिक्त जानकारी होती है, जो पाठ्यपुस्तकों में नहीं होती। नियमित उपस्थिति से छात्रों की स्मृति क्षमता में सुधार होता है। जो छात्र नियमित रूप से अनुपस्थित रहते हैं, उनके लिए बाद में पकड़ना कठिन हो जाता है। कक्षाओं में नियमित उपस्थिति से छात्रों में अनुशासन और समय प्रबंधन के गुण विकसित होते हैं। नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहने वाले छात्र शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। कक्षाओं में नियमित उपस्थिति छात्रों को शिक्षकों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने में मदद करती है। कक्षाओं में उपस्थिति छात्रों को सहपाठियों से मिलने और अध्ययन समूह बनाने का अवसर प्रदान करती है। कुछ कक्षाओं में उपस्थिति को अंकों में गिना जाता है, इसलिए नियमित उपस्थिति से छात्र सक्रिय रूप से योगदान दे सकते हैं। इस तरह, छात्रों और अभिभावकों दोनों की सहभागिता एक सकारात्मक और उत्पादक शैक्षणिक वातावरण को बनाए रखने में सहायक होती है।